चाहत निर्गुण सगुण को, ज्ञानवंत की बान।
प्रकट करत निर्गुण सगुन, सिवा निवाजै दान ॥१४५॥

शब्दार्थ—निर्गुण=निराकार, गुणहीन। सगुण=साकार, गुणयुक्त। निवाजै=कृपा करके।

अर्थ—(गुणहीन) और सगुण (गुणवान) सब तरह के व्यक्तियों को दान देकर शिवाजी यह प्रगट करते हैं कि ज्ञानी पुरुष का यह स्वभाव है कि वह निर्गुण तथा सगुण दोनों को चाहता है। अर्थात् ज्ञानी पुरुष परमेश्वर के निराकार और साकार दोनों रूपों को एक समान समझते हैं।

विवरण—यहाँ 'प्रकट करत' इस एक ही क्रिया से जहाँ शिवाजी का सगुण और निर्गुण को एक समान समझना और ज्ञानियों का भी निर्गुण और सगुण में अभेदभाव लक्षित होता है, वहाँ शिवाजी के सब को दान देने का कारण भी यही अभेद भाव बताया गया है, अतः यहाँ निदर्शना अलंकार है।